सत्यमेव जयते

राजस्थान सरकार

पंच गौरव कार्यक्रम
जिला डीग

सत्यमेव जयते

मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच–गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में **पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित किया गया है।** यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

पंच गौरव कार्यक्रम के तहत डीग जिले के लिए मार्बल मूर्ती को उत्पाद, सरसों को उपज, कुश्ती को खेल, अर्जुन के वृक्ष को वनस्पति प्रजाति और जलमहल डीग को जिले के पर्यटन स्थल के रुप में चिन्हित किया गया है।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करता हूं।

(भजन लाल शर्मा)

एक जिला–एक प्रजातिः–अर्जुन का वृक्ष

राजस्थान के भरतपुर संभाग में स्थित डीग जिले हेतु वन विभाग द्वारा ''एक जिला एक उत्पाद'' (**One District One Product**) योजना के तहत अर्जुन (टर्मिनालिया अर्जुना) वृक्ष को चयनित किया गया है। इस पहल के अंतर्गत वन विभाग एक हाई–टेक नर्सरी की स्थापना करेगा, जिसका मुख्य उद्देश्य अर्जुन वृक्ष का संरक्षण और पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखना होगा। यह परियोजना हरियाली को बढ़ावा देने, जैव विविधता को संरक्षित करने और स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

अर्जुन वृक्ष का धार्मिक एवं अन्य महत्व –

अर्जुन वृक्ष हिंदू धर्म में पवित्र माना जाता है। इसका नाम महाभारत के महान योद्धा अर्जुन के नाम पर रखा गया है, जो साहस और सहनशीलता का प्रतीक हैं। इस वृक्ष को कई मंदिरों और आश्रमों में विशेष स्थान दिया जाता है क्योंकि इसे शुद्धि और स्वास्थ्य का प्रतीक माना जाता है। आयुर्वेद में अर्जुन की छाल को हृदय रोग के लिए अमृत तुल्य बताया गया है और यह हजारों वर्षों से औषधीय उपयोग में लाई जाती है।

कुछ मान्यताओं के अनुसार, यह वृक्ष भगवान विष्णु से भी जुड़ा हुआ है, जो इसे दिव्य ऊर्जा का स्रोत बनाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में इसे जल स्रोतों के पासलगाया जाता है, क्योंकि इसकी जड़ें मिट्टी को मजबूती देती हैं और जल संरक्षण में सहायक होती हैं। अर्जुन वृक्ष की छाया में ध्यान और साधना करने से मानसिक शांति और आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त होती है।

इसके पत्ते और छाल कई धार्मिक अनुष्ठानों में उपयोग किए जाते हैं, जिससे इसका आध्यात्मिक महत्व और बढ़ जाता है। यह वृक्ष न केवल धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में भी सहायक है।

भारत में अर्जुन वृक्ष का ऐतिहासिक महत्व

अर्जुन वृक्ष का उल्लेख 3000 से अधिक वर्षों पहले लिखे गए आयुर्वेदिक ग्रंथों, जैसे कि चरक संहिता और सुश्रुत संहिता में मिलता है। इन ग्रंथों में इसे हृदय के लिए अत्यंत लाभकारी बताया गया है। वेदों और प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में भी इस वृक्ष की महत्ता का उल्लेख है, जहाँ इसे प्राकृतिक स्वास्थ्य और संतुलन बनाए रखने वाला वृक्ष कहा गया है।

भारत के प्राचीन योद्धा और राजाओं के किलों और मंदिरों के पास अर्जुन वृक्ष लगाए जाते थे, क्योंकि यह सुरक्षा और शक्ति का प्रतीक माना जाता था। तमिल संगम साहित्य में भी इस वृक्ष का उल्लेख मिलता है, जहाँ इसे प्राकृतिक चिकित्सा के लिए आवश्यक बताया गया है। ब्रिटिश शासन के दौरान, औपनिवेशिक वैज्ञानिकों ने इसके औषधीय गुणों का अध्ययन किया और इसे आधुनिक चिकित्सा में शामिल करने का प्रयास किया।

अर्जुन वृक्ष भारतीय संस्कृति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह केवल एक साधारण वृक्ष नहीं, बल्कि शक्ति, स्वास्थ्य और पर्यावरण संतुलन का प्रतीक है, जो प्राचीन काल से लेकर आज तक भारतीय समाज में सम्मान प्राप्त करता आ रहा है।

अर्जुन वृक्ष का औषधीय महत्व

अर्जुन वृक्ष भारतीय पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह हृदय रोगों के उपचार, रक्तचाप नियंत्रण, मधुमेह प्रबंधन और कई अन्य स्वास्थ्य लाभों के लिए जाना जाता है।

अर्जुन वृक्ष संरक्षण और हाई–टेक नर्सरी की स्थापनाः वन विभाग की पहल

वन विभाग द्वारा हाई–टेक नर्सरी की स्थापना इस योजना का एक अभिन्न अंग होगी। इस नर्सरी में निम्नलिखित सुविधाएं उपलब्ध होंगीः

- आधुनिक तकनीकों का उपयोग टिशू कल्चर ड्रिप सिंचाई, क्लोनिंग और जैविक उर्वरकों का उपयोग।
- संरक्षित वातावरण पौधों के लिए नियंत्रित जलवायु प्रणाली और ग्रीनहाउस तकनीक।
- गुणवत्तापूर्ण पौध तैयार करनाः उच्च उपज और जलवायु–अनुकूलनशील पौधों का उत्पादन।
- स्थानीय किसानों और उद्यमियों के लिए प्रशिक्षणः वृक्षारोपण, औषधीय पौधों के व्यापार और उनके व्यावसायिक उपयोग पर कार्यशालाएँ।

यह पहल स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाने में सहायक होगी। वन विभाग द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे, जिससे किसान और स्थानीय उद्यमी अर्जुन वृक्ष की खेती और उससे जुड़ी आर्थिक संभावनाओं को समझ सकें। इससेमहिला सशक्तिकरण भी संभव होगा, क्योंकि महिलाएं औषधीय पौधों की खेती और प्रसंस्करण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

निष्कर्ष :–

डीग जिले में अर्जुन वृक्ष को ''एक जिला एक उत्पाद'' योजना के तहत बढ़ावा देने की यह पहल पर्यावरण संरक्षण, आर्थिक उन्नति और सामाजिक विकास के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है। हाई–टेक नर्सरी की स्थापना न केवल अर्जुन वृक्ष की संख्या बढ़ाएगी, बल्कि इसकी औषधीय और पारिस्थितिकीय उपयोगिता को भी उजागर करेगी। यह योजना स्थानीय समुदायों, किसानों और पर्यावरण प्रेमियों के लिए एक नया मार्ग प्रशस्त करेगी और सतत विकास में योगदान देगी।

छाल

पत्ती

फूल

फल

एक जिला–एक उत्पादः– मार्बल मूर्ति

64 प्रकार की कलाओं में मूर्तिकला अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है, जिसमें एक शिल्पकार अपनी भावनाओं को पत्थर पर टांकी एवं हथौडे की सहायता से उकेर कर उन्हें एक जीवंत रूप प्रदान करता है। धर्म प्रधान भारत देश में प्राचीन काल से ही मूर्तिकला का विकास देखने को मिलता है जोकि वर्तमान में नवीनता एवं आधुनिकता के साथ उन्नति पर है।

डीग जिले की मुख्यतः नगर, पहाडी, कामां, सीकरी तहसील में मार्बल मूर्ति निर्माण का कार्य किया जाता है। वर्तमान में यहां के लगभग 300 दस्तकार अप्रत्यक्ष रूप से एवं लगभग 200 दस्तकार प्रत्यक्ष रूप से मार्बल मूर्ति निर्माण कार्य से जुडे हुए हैं। इस क्षेत्र में मुख्यतः दत्तात्रेय मूर्ति (नगला काला), शिव परिवार मूर्ति (जलालपुर) एवं दुर्गा मूर्ति (सीकरी) प्रसिद्ध है। प्रारम्भ में इस क्षेत्र में केवल धार्मिक मूर्तियां बनाई जाती थी, परन्तु वर्तमान में पशु–पक्षी, महापुरुष, व्यक्ति विशेष एवं सजावट संबंधी मूर्तियों का भी निर्माण होने लगा है। जिले में धार्मिक पर्यटन के काफी स्थल होने के कारण यहां पर मार्बल मूर्तिकला व्यवसाय के लिये अच्छी संभावनाएं हैं।

- **<u>मार्बल मूर्ति निर्माण की प्रक्रिया</u>**ः–मूर्ति निर्माण प्रक्रिया में कई चरण सम्मिलित होते हैं जैसे पत्थर की कटाई, उस पर डिजाईन बनाना, नक्काषी करना एवं अन्त में उसे फिनिशिंग देते हुए तैयार मूर्ति को बाजार तक पहुंचाना। इस प्रक्रिया में सबसे पहले पत्थर के बडे–बडे ब्लॉकों को योजनाबद्ध तरीके से चाही गई आकृति के अनुसार अंदाजन काट लिया जाता है। उसके बाद चारकोल की मदद से पत्थर पर बनाई जाने वाली आकृति के अनुसार उसी अनुपात में निशान लगा दिये जाते हैंएवं अतिरिक्त पत्थर की सतह को

हथोडी एवं छेनी की सहायता से काट कर अलग कर दिया जाता है। पत्थर नक्काशी प्रक्रिया के निम्न चरण हैः–

1. Planning
2. Layout
3. Roughing Out
4. Sanding
5. Grinding
6. Polishing

- **<u>प्रोत्साहनः</u>**–मार्बल मूर्तिकला से जुडे दस्तकारों के प्रोत्साहन हेतु उद्योग एवं वाणिज्य विभाग द्वारा राज्य कलस्टर विकास कार्यक्रम अंतर्गत द्विवर्षीय मार्बल मूर्ति आर्ट क्लस्टर, सीकरी का संचालन किया गया, जिसके अंतर्गत कौशल प्रशिक्षण, बायर–सेलर मीट, एक्सपोजर विजिट, जागरूकता शिविर जैसे कार्यक्रम आयोजित किये गये। केन्द्र सरकार द्वारा संचालित पीएम विश्वकर्मा योजनान्तर्गत भी मार्बल मूर्तिकला से जुडे शिल्पकारों को कौशल प्रशिक्षण, टूलकिट एवं ऋण सुविधायें प्रदान की जा रही हैं। साथ ही केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा वर्तमान में विभिन्न उद्यम हितैषी योजनायें संचालित की जा रही हैं यथा राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना 2024, राजस्थान एमएसएमई पॉलिसी 2024, राजस्थान निर्यात संवर्द्धन नीति 2024, एकीकृत क्लस्टर विकास योजना, राजस्थान ओडीओपी पॉलिसी 2024, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम इत्यादि, जिनके अंतर्गत उद्यमी अपनी नवीन एवं विस्तार इकाईयों के लिये विभिन्न प्रकार के अनुदान तथा छूट जैसे कि विनियोजन अनुदान, पूंजीगत अनुदान, ब्याज अनुदान, विद्युत कर/स्टाम्प ड्यूटी/भूमि रूपान्तरण शुल्क/मंडी शुल्क छूट, किराया पुनर्भरण इत्यादि का लाभ उठा सकते हैं। उत्पाद के विपणन एवं प्रदर्शन हेतु भी विभाग द्वारा समय–समय पर मेले एवं प्रदर्शनी

तथा उद्यमियों के लिये जागरूकता शिविर एवं कार्यशाला का आयोजन किया जाता रहा है।

एक जिला–एक खेलः– कुश्ती

कुश्ती दो (कभी–कभी अधिक) प्रतियोगियों या विरल भागीदारों के बीच एक शारीरिक प्रतियोगिता है, जो एक बेहतर स्थिति हासिल करने और बनाए रखने का प्रयास करते हैं। कुश्ती विभिन्न प्रकारों में आती है, जैसे कि लोक शैली, फ्रीस्टाइल, ग्रीको रोमन, कैच, सबमिशन, जूडो, सैम्बो और अन्य।पारंपरिक ऐतिहासिक और आधुनिक दोनों शैलियों के साथ अलग–अलग नियमों के साथ शैलियों की एक विस्तृत श्रृंखला है। कुश्ती तकनीकों को अन्य मार्शल आर्ट के साथ–साथ सैन्य हाथ से हाथ लड़ने वाली प्रणालियों में शामिल किया गया है। यह खेल पुरुषों के साथ साथ महिलाओं के बीच भी खेला जाता हैं महिलाओं के लिए केवल फ्री स्टाइल कुश्ती होती है जबकि पुरुष वर्ग में फ्री स्टाइल और ग्रीक रोमन दोनों प्रकार की कुश्ती होती हैं।

इतिहासः–कुश्ती युद्ध के सबसे पुराने रूपों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है। भारतीय प्राचीन इतिहास में जहां रामायण काल में बाली सुग्रीव के मल्लयुद्ध का वर्णन है, तो महाभारत काल में कृष्ण–चाणूर और मुष्टिक बलराम के मल्लयुद्ध का उल्लेख मिलता है।

डीग क्षेत्र में वर्तमान में कुश्ती खेल को आगे बढ़ाने की संभावनाएं–

डीग कस्बा रियासतकालीन राजधानी था तब महाराजा सूरजमल ने गाँव–गाँव में अखाड़े खोलने व हनुमान मंदिर बनवाए जाने का आदेश पारित कियाजिससे क्षेत्र में ताकतवर पहलवान हो सकें और युवाओं में ताकत बरकरार बनी रहे। डीग क्षेत्र में महाराजाओं द्वारा कुश्ती दंगलों का आयोजन किया जाता था जो आज भी होता हैं । जैसे– नगर परिषद डीग द्वारा जवाहर प्रदर्शनी ब्रज यात्रा मेले में विशाल कुश्ती दंगल का आयोजन होता हैं। जिससे कुश्ती खेल को बढ़ावा मिलता है।

कामां नगरपालिका द्वारा भोजन थाली मेला विशाल कुश्ती दंगल का आयोजन, नगरपालिका कुम्हेर में विशाल कुश्ती दंगल का आयोजन, सिद्ध बाबा मेला सिनसिनी में विशाल कुश्ती दंगल का आयोजन, गणगौर मेला जनूथर, अस्तावन कुम्हेर में विशाल कुश्ती दंगल के आयोजन, इसी तरह कासौट, पास्ता, इकलहरा,श्रीराम यात्रा मेला नगर आदि क्षेत्रों में कुश्ती को बढ़ावा देने के लिए दंगल आयोजित किये जाते हैं।

डीग क्षेत्र में कुश्ती के क्षेत्र में कारे पहलवान कौरेर (रुस्तम–ए–हिन्द) से आज तक अनेको ख्याति नाम पहलवान रहे हैं । राजस्थान में होने वाले कुश्ती के क्षेत्र में सबसे बड़ा

खिताब राजस्थान केसरी का रहा हैं। इस खिताब को जीतने में डीग क्षेत्र के पहलवानों का दबदबा रहा हैं । जिसको नत्थन पहलवान परमदरा, रतन पहलवान परमदरा, हरी पहलवान पास्ता, भीम पहलवान गिरसै आदि का कब्जा रहा हैं।

<u>पंचगौरव कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रस्तावित कार्यः–</u> पंचगौरव कार्यक्रम के अन्तर्गत जिला डीग से कुश्ती के प्रोत्साहन हेतु निम्नानुसार प्रस्ताव है :–

क्रं सं	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत	विभाग का नाम
1	जिला मुख्यालय पर कुश्ती खेल को प्रोत्साहन देने के लिए कुश्ती एकेडमी की स्थापना करवाई जाये।	लगभग 90 लाख रूपये	शिक्षा विभाग
2	कुश्ती के रूझान वाली ग्राम पंचायतों में इण्डोर कुश्ती अखाड़े बनवाये जावें ।		
3	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत ऐसे शारीरिक शिक्षक जिनका खेल कुश्ती है, उनके माध्यम से राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कुश्ती खेल में रूचि रखने वाले विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिलाने के लिए जिला स्तरीय कार्यक्रम की शुरूआत नये सत्र 2024–25 में कार्ययोजना बनाकर शुरू की जावे।		
4	ग्रीष्मकालीन अवकाश में 15 दिवसीय कुश्ती के लिए सघन प्रशिक्षण किशनलाल जोशी रा.उ.मा. वि. डीग में आयोजित किया जावे	लगभग 05 लाख रूपये	शिक्षा विभाग

एक जिला–एक उपजः– सरसों

सरसों के पौधों एवं इससे बने उत्पादों का संस्कृत, ग्रीक, रोमन व बाईबिल ग्रन्थों में उल्लेख मिलता है। अधिकतर देशों के पुराने ग्रन्थों में सरसों औषधि के रूप में प्रयोग की जाती रहीं है। इसकी खेती पुराने समय से ही विस्तृत रूप से की जाती रही है।

वितरण एवं क्षेत्रफल

- विभिन्न राज्यों मे राजस्थान का सरसों बुवाई के क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से प्रथम स्थान है।
- डीग जिले के अन्तर्गत सरसों बुवाई का क्षेत्रफल 114372 हैक्ट. है। जिले में लगभग 165000 लघु एवं सीमान्त कृषक है, जिलें में सिंचाई का मुख्य साधन नलकूप एवं नहर है। जिले में सिंचित क्षेत्रफल 65 प्रतिशत तथा असिंचित क्षेत्रफल 35 प्रतिशत है।

एक जिला–एक पर्यटन स्थलः– जलमहल डीग

जिला स्तर डीग पर चयनित पंच गौरव के संवर्धन एवं विकास हेतु एक पर्यटन के क्षेत्र में डीग महल का चयन किया गया है।

जाट राजा ठाकुर बदन सिंह ने 1722 में डीग की स्थापना की, जो भरतपुर राज्य की पहली राजधानी थी। डीग भरतपुर रियासत के शासकों के लिए एक महत्वपूर्ण ग्रीष्मकालीन राजधानी थी। यह 18वीं शताब्दी में बनाया गया था। यह अपनी मजबूत संरचना और मुगल वास्तुकला से प्रेरित भव्यता के लिए जाना जाता है।

मुख्य द्वार

जल महल

जलमहल स्थित रंगीन फव्वारा

<u>हनुमान मंदिरः</u>

डीग महल में एक हनुमान मंदिर भी है, जो पर्यटकों के लिए एक महत्वपूर्ण आकर्षण है।

ब्रज एवं डीग महोत्सवः

डीग का सबसे लोकप्रिय त्यौहार ब्रज महोत्सव है जो होली के आप–पास के दिनों में मनाया जाता है। तथा डीग महोत्सव अक्टूबर माह में मनाया जाता है।

डीग का जलमहल :

यह महल अपनी सुंदर वास्तुकला, फव्वारों और उद्यानों के लिए प्रसिद्ध है। कई अन्य ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थल भी हैं, जैसे कि केशव भवन, रूप सागर और गोपाल सागर भी इसी महल में विद्यमान हैं। डीग का जलमहल अपनी अद्भुत वास्तुकला और बिना बिजली के चलने वाले फव्वारों के लिए प्रसिद्ध है।

जल महलः

डीग के जल महल (Deeg Ke Jal Mahal) का निर्माण भरतपुर के शासक, महाराजा सूरजमल ने करवाया था, जिन्होंने 1772 में इस किले का निर्माण करवाया था। राजपूत शैली में निर्मित पुराना महल का निर्माण बदन सिंह ने करवाया था. इस महल के विस्तृत आयताकार आंतरिक भाग में दो अलग–अलग प्रांगण हैं. इनमें बनी मेहराब दंताग्र व नुकीली दोनों प्रकार की हैं, जो एक अलग ही प्रभाव छोड़ती हैं. डीग महल में प्रवेश करते ही यह अजीब सी अनुभूति होती है।

जिला प्रशासन डीग

https://deeg.rajasthan.gov.in